श्री राम चंद्र मिशन

ECHOES
इंडिया
समाचार पत्र

गुरुदेव के समाचार

हैदराबाद: ६ से ९ मार्च

हैदराबाद की उनकी यात्रा से कुछ घण्टे पहले ही, स्थानीय अभ्यासियों को आदरणीय कमलेश भाई की आगामी यात्रा का समाचार प्राप्त हुआ। वह सीधे आँचलिक आश्रम, थुमकुंटा पहुँचे एवं सत्संग के बाद अपने सम्बोधन में कहा, "मेरे लिये यह एक महत्वपूर्ण यात्रा है, क्योंकि हमारे प्रिय गुरुदेव की महासमाधि के बाद यह मेरी प्रथम यात्रा है । इस स्थान का भ्रमण अर्थात् भारत में यात्रा का प्रथम केन्द्र हमेशा मेरी याद में रहेगा ।" उन्होंने जोर दिया कि गुरुदेव से शारीरिक स्तर पर मिलना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि हृदय से हृदय का सम्पर्क बनाना महत्वपूर्ण है ।

७ मार्च को कमलेश भाई ने बी.एच.ई.एल. आश्रम में ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया और दो सत्संग कराये । उन्होंने तीन 'सुझावों', जब वह प्रार्थनापूर्ण भाव से दिये जायें, तथा साधना के नियमित अभ्यास की आवश्यकता को रेखांकित किया । इसके बाद कमलेश भाई ने 'कान्हा', एक आश्रम परियोजना, जो कि प्रिय चारी जी की पोषित परियोजनाओं में से एक थी; जाने का निश्चय किया ।

८ मार्च को उन्होंने 'थुमकुंटा' में सत्संग कराया । अपनी वार्ता में उन्होंने बताया कि प्रेम के आलिंगन द्वारा हम अपने हृदयों को संसार में दोषों से बचा सकते हैं । दिन में एक प्रशिक्षक गोष्ठी का आयोजन किया गया और उन्होंने प्रशिक्षकों के कार्य तथा नयी विधि से सम्बन्धित बिन्दुओं पर स्पष्टीकरण दिये । सायंकालीन सत्संग के बाद वह वापस 'कान्हा' को चले गये ।

९ तारीख को कमलेश भाई ने 'कान्हा' में सत्संग कराया और परियोजना की बारीकियों का पुन: निरीक्षण किया । वह शाम के समय चैन्नई को वापस लौटे ।

महाराष्ट्र यात्रा

मुम्बई: १३ से १५ मार्च

शुक्रवार १३ तारीख को कमलेश भाई मुम्बई पहुँचे और बदलापुर में नये आश्रमस्थल के निरीक्षण के लिये प्रस्थान किया । उन्होंने सत्संग कराया व समिति के सदस्यों को स्थल के विकास के सम्बन्ध में निर्देश दिये । पनवेल आश्रम के लिये प्रस्थान से पहले उन्होंने एक पौधा लगाया ।

मुम्बई में उन्होंने सत्संग कराये, प्रशिक्षकों से मिले और अभ्यासियों को सम्बोधित किया । उन्होंने बताया कि हमें अपने जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक के बीच संतुलन का बोध बनाये रखना होता है । उन्होंने कहा इसका मतलब है कि आदर्श रूप से व्यक्ति का भौतिक जीवन ऐसा हो जो कि उसके आध्यात्मिक पथ पर अनुगमन को सुगम बनाये ।

शनिवार १४ तारीख को सत्संग के बाद कमलेश भाई अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बोले । उन्होंने कहा कि दर्द सभी के लिये समान होता है, जबकि कष्ट एक चयन हो सकता है; आगे यह भी कहा कि उन्होंने भी दर्द का अनुभव किया है लेकिन कष्ट कभी नहीं भोगा । वह पुणे, अहमदनगर, सूरत, सोलापुर, चिखली, औरंगाबाद, नासिक व बृहत मुम्बई क्षेत्र के केन्द्रों सहित दूर-दराज के केन्द्रों से रविवार सुबह सत्संग में आये हुये जनसमूह को देखकर विशेष प्रसन्न थे ।

उन्होंने मुम्बई में प्रशिक्षकों को सम्बोधित किया और उनके सम्बोधन के पश्चात् प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया । इस अन्त:चर्चा के कुछ उद्धरण निम्न हैं:

* बाबूजी महाराज के अनुसार, हमारी वास्तविक यात्रा केवल परमोच्च के साथ एकाकार होने के बाद ही प्रारम्भ होती है; उन्होंने

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

इसमें जोड़ा कि कुछ वैसे ही जैसे जीवन विवाह के बाद ही वास्तविक रूप में आरम्भ होता है ।

* ध्यान में आने वाले विचारों से किस तरह का व्यवहार किया जाये, इस विषय में उन्होंने बताया कि ध्यान के दौरान विचारों का आना स्वाभाविक है, एक विचारशून्यता की स्थिति को प्राप्त करना उपयुक्त नहीं है । परन्तु यदि हम दिव्य प्रकाश के विचार को लगातार अपने मन में रखें, तो हम इन विचारों के बावजूद ध्यान कर सकते हैं ।

रविवारीय सत्संग तथा समय पूर्व दिन का भोजन प्राप्त कर उन्होंने नासिक के लिये प्रस्थान किया ।

मध्य महाराष्ट्र: १५ से १९ मार्च

कमलेश भाई सड़क मार्ग से अपराह्न में **नासिक** पहुँचे तथा तुरन्त ही उन्होंने वहाँ एकत्रित ३०० अभ्यासियों को सत्संग कराया । शाम के समय उन्होंने आश्रम स्थल पर निर्मित अस्थायी ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया । उन्होंने युवाओं के साथ एक घण्टे लम्बा सत्र किया तथा नये अभ्यासी, टी०वी० देखने में समय की बर्बादी, आधुनिक पारिवारिक जीवन तथा हम स्वयं को कैसे सुधार सकते हैं; आदि विषयों के बारे में अनेक प्रश्नों के उत्तर दिये ।

१६ तारीख को सत्संग तथा नाश्ते के बाद उन्होंने औरंगाबाद के लिये प्रस्थान किया । वे रास्ते में **येवला** नामक एक सेटेलाइट केन्द्र पर रुके तथा वहाँ सत्संग कराया । बारह नये आगंतुकों को वहाँ सहज मार्ग में प्रवेश कराया गया । दिन में भोजन के बाद वे पुन: चल पड़े तथा सायं लगभग ३ बजे **लासूर** केन्द्र पर पहुँचे । वहाँ उन्होंने ध्यान केन्द्र के लिये प्रस्तावित भूमि के निकट एक वृक्ष के नीचे लगभग ५० अभ्यासियों को सत्संग कराया । यह वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों के लिये एक अविस्मरणीय क्षण था ।

कमलेश भाई अन्तत: सायंकाल ४:०० बजे **औरंगाबाद** पहुँचे । औरंगाबाद आश्रम में सत्संग कराने से पहले उन्होंने प्रेम सहित ध्यान करने की आवश्यकता पर बल देते हुये एक लघु वार्ता दी ।

मंगलवार १७ तारीख को कमलेश भाई औरंगाबाद में "ध्यान का अनुभव प्राप्त करें" विषय पर वार्ता देने हेतु राजकीय इन्जीनियरिंग कॉलेज गये । वहाँ पर २०० से अधिक जिज्ञासु उपस्थित थे, जिसमें छात्र, संकाय सदस्य तथा आमन्त्रित लोग सम्मिलित थे । अपनी वार्ता में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ज्ञान एकत्र करने की अपेक्षा अनुभव से सीखना अधिक महत्वपूर्ण है । उन्होंने सहज मार्ग पद्धति में ध्यान की प्रकृति तथा प्राणाहुति से प्राप्त प्रगाढ़ सहायता के बारे में बताया । उन्होंने विश्रान्ति (रिलैक्सेशन) की विधि का प्रदर्शन भी किया। इसके बाद उन्होंने अनुभव प्राप्त करने के इच्छुक जिज्ञासुओं को ध्यान भी कराया । लगभग सभी ने इसमें भाग लिया तथा सत्र के अन्त में ४० से अधिक विद्यार्थियों ने अभ्यास प्रारम्भ करने की इच्छा व्यक्त की ।

इसके बाद कमलेश भाई ने **चिखली** के लिये प्रस्थान किया तथा वहाँ लगभग २५० अभ्यासियों के लिये, जिनमें २२ नये अभ्यासी सम्मिलित थे, शाम का सत्संग कराया । सत्संग के बाद उन्होंने ३५ मिनट तक हिन्दी में वार्ता दी । तत्पश्चात् उन्होंने अभ्यासियों के साथ रात्रि का भोजन ग्रहण किया तथा प्रत्येक अभ्यासी को व्यक्तिगत रूप से प्रसाद बाँटा ।

१८ तारीख को प्रात:कालीन सत्संग के बाद उन्होंने **जालना** के लिये प्रस्थान किया । वहाँ पर उन्होंने सत्संग कराया तथा भविष्य में ध्यान

केन्द्र के निर्माण हेतु एक अभ्यासी द्वारा दान में दी गयी भूमि का भ्रमण किया ।

औरंगाबाद लौटकर उन्होंने आश्रम में शाम का सत्संग कराया । उन्होंने अभ्यासियों से हिन्दी में बातें की और उन्हें स्वयं में परिवर्तन लाने के लिये प्रोत्साहित किया । अपने प्रवास के दौरान उन्होंने अभ्यासियों को यह महसूस कराया कि वह उनमें से ही एक हैं ।

१९ मार्च को वह **अहमदनगर** केन्द्र को प्रस्थान कर गये, जहाँ ओम गार्डन मंगल कार्यालय में सुबह का सत्संग आयोजित किया गया । इसके बाद कमलेश भाई एक वरिष्ठ अभ्यासी के घर गये । उन्होंने अपनी योजना बदलकर औरंगाबाद लौटने की जगह पुणे जाने का निश्चय किया ।

पुणे: १९ से २२ मार्च

कमलेश भाई अपने छोटे से दल के साथ शाम के समय पुणे पहुँचे और एक अभ्यासी के निवास पर सत्संग कराया । २० तारीख को वह पानशेत रिट्रीट सेन्टर गये, जहाँ उन्होंने अपने भ्रमण की सम्पूर्ण अवधि में सुबह और शाम के सत्संग कराये । उन्होंने १५ नये प्रशिक्षक बनाये और अभ्यासियों को अनेक वार्तायें दीं । अपनी एक वार्ता में उन्होंने कहा, "जीवन में चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, हमारे हृदयों से हमेशा प्यार की धारा बहती रहनी चाहिये । यह एक नदी की भाँति होनी चाहिये, न कि रुके हुये जल की तरह ।" एक अन्य सत्र में उन्होंने कहा, "हृदय हमेशा तुमसे सत्य कहेगा और सही मार्गदर्शन करेगा । लालच और अहंकार हस्तक्षेप और गुमराह करते हैं । हृदय की बात का पालन करने के लिये साहस की जरूरत होती है । हमेशा अपने हृदय का अनुसरण करो ।"

कॉटेज में उनका समय नये अभ्यासियों से मिलने, वर्तमान अभ्यासियों से बात–चीत करने, हँसी–मज़ाक और अपने अनवरत कार्य करने में बीत गया । प्रत्येक शाम खड़कवासला बाँध के किनारों पर टहलकर उन्होंने एक सुखद आनन्द लिया जहाँ वे कुछ क्षणों के लिये मौन बैठ जाते, फ़िर अभ्यासियों और बच्चों के साथ बातें करते और प्रत्येक को अपने प्यार और खुलेपन से मंत्रमुग्ध कर देते थे ।

तटीय आन्ध्र भ्रमण

२ से १२ अप्रैल

२ अप्रैल को कमलेश भाई सुबह ६.३० बजे तक तैयार हो गये थे और ध्यान में बैठ गये । उन्होंने तटीय आन्ध्र प्रदेश के साथ लगे अनेक केन्द्रों के भ्रमण की इस नयी यात्रा के लिये गुरुदेव से प्रार्थना की । उन्होंने बताया कि चारीजी इन सभी केन्द्रों का पुनः दौरा करना चाहते थे, परन्तु अनेक कारणों से यह सम्भव नहीं हो पाया ।

वह सुबह करीब ९.०० बजे तक **सुल्लुरपेट** पहुँच गये थे और वहाँ एकत्रित १२० अभ्यासियों को उन्होंने सत्संग कराया । एक छोटी सी वार्ता देने के बाद वह **नेल्लोर** के लिये प्रस्थान कर गये । अगले दिन नेल्लोर शहर से करीब १५ कि०मी० दूर **मन्नवरप्पडू** में उन्होंने नये 'सुलोचना सदन आश्रम' का उद्घाटन किया । एक वार्ता के दौरान उन्होंने समझाया कि संस्कार और अहंकार, दोनो का अलग अस्तित्व है । अहंकार का संस्कार से कोई लेना देना नहीं है । जब हम जान–बूझ कर यह सोचते हैं कि 'मैं यह नहीं करुँगा' या 'मैं अपनी पत्नी से ठीक से व्यवहार नही करुँगा', यह इरादतन है । यह अशान्ति, अराजकता तथा और अधिक संस्कार पैदा करता है । संस्कार का परिणाम अहंकार नहीं है, बल्कि अहंकार और अधिक संस्कार उत्पन्न करता है ।

अपने दौरों को जारी रखते हुये उन्होंने **कावली** में आश्रम का भ्रमण किया और फ़िर ४ से ६ अप्रैल तक **ओंगोल** में समय व्यतीत किया ।

इन स्थानों में स्थानीय अभ्यासियों के साथ ही निकटतम केन्द्रों से भी अत्यधिक संख्या में अभ्यासी अपने गुरुदेव के साथ समय व्यतीत करने हेतु एकत्रित हुए । गुरुदेव ने सत्संग कराया तथा अभ्यासियों व बच्चों के साथ समय व्यतीत किया । दिनांक ६ को चिलाकलुरिपेट के रास्ते में उन्होंने एक लघु गाँव **यनामाडला** का भ्रमण किया, जहाँ उन्होंने २५० स्थानीय लोगों को सम्बोधित किया जो सहजमार्ग के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते थे । उन्होंने जीवन के लक्ष्य और ध्यान की आवश्यकता के बारे में संदेश दिया ।

तत्पश्चात् कमलेश भाई ने **चिलाकलुरीपेट** के लिये प्रस्थान किया । सत्संग के पश्चात् उन्होंने आश्रम की प्रशंसा की और एक संक्षिप्त संदेश दिया, जिसमें उन्होंने स्थानीय दल को वृक्षारोपण की सलाह दी। उन्होंने कहा कि लालाजी की इच्छा थी कि काकभुशुण्डि आश्रम की भाँति सभी आश्रम हरे-भरे और शान्तिपूर्ण हों । वृक्ष प्राणाहुति को रोके रखता है, किन्तु मानव प्राणाहुति को रोक भी सकता है एवं छोड़ भी सकता है । अतएव अधिक वृक्ष होने से आश्रम की ऊर्जा संचित रहती है ।

दोपहर तक वे **कोलाकलुर** आश्रम पहुँचे, जहाँ उन्होंने सत्संग कराया और तटीय लोगों के समूह की उपस्थिति का अद्वितीय वातावरण निरन्तर महसूस किया जाता रहा । अपराह्न में विश्राम के दौरान उन्होंने कहा कि इस यात्रा को हमारे गुरुजन बहुत ध्यान से देख रहे हैं और वे सम्पूर्ण विश्व के लिये विशिष्ट कार्य कर रहे हैं । मानवता की भलाई और अस्तित्व के लिये आध्यात्मिक खुलेपन की आवश्यकता है ।

७ अप्रैल की प्रात: ८:३० बजे कमलेश भाई **गुन्टूर** आश्रम पहुँचे । वहाँ लगभग ४०० अभ्यासी उनके स्वागत हेतु उपस्थित थे । सत्संग के पश्चात् उन्होंने परिसर में भ्रमण कर प्रत्येक चीज का सूक्ष्म अवलोकन किया । उनकी यात्रा के स्मरण के प्रतीक स्वरूप उन्होंने आम के तीन पौधे रोपित किये । प्रात: १०:३० बजे वे विजयवाड़ा के लिये रवाना हो गये ।

विजयवाड़ा के रास्ते में कमलेश भाई के०एल०विश्वविद्यालय रुके, जहाँ विजयवाड़ा के दल ने एक खुले सत्र का आयोजन कर रखा था । लगभग ३०० विद्यार्थी एवं संकाय सदस्यों ने जीवन में ध्यान की आवश्यकता पर संक्षिप्त परिचय वार्ता को उत्साहपूर्वक सुना । अपनी प्रेरणास्पद वार्ता के पश्चात् उन्होंने विश्रान्ति सत्र का संचालन किया और कुछ ही क्षणों में प्रतिभागी गहरी स्थिति में डूब गये । बाद में उन्होंने सभी विद्यार्थियों को प्रथम सिटिंग दी और आने वाले दिनों में परिचयात्मक सिटिंग्स को पूर्ण करने हेतु दूरस्थ सिटिंग जारी रखी ।

विजयवाड़ा आश्रम में लगभग ४० बच्चों ने हृदय की प्रेमपूर्ण भावना व्यक्त करने वाला एक गीत गाते हुए, उनका हार्दिक स्वागत किया गया। सत्संग के पश्चात् उन्होंने एस०एम०एस०एफ़० भवन में भ्रमण किया, जो कि आश्रम के समीप है । उन्होंने अन्तर्दृष्टि प्रदान की और केन्द्र प्रभारियों को परामर्श दिया कि वे स्थान का श्रेष्ठतम उपयोग करें जो कि शहर के बीचों बीच स्थित है और बहुमूल्य है । उस शाम उनके कॉटेज में एक विचार गोष्ठी रखी गयी, जिसमें उन्होंने इच्छा और कामना के मध्य अन्तर दर्शाते हुए अन्तर्दृष्टि दी । उन्होंने हमें यह भी चिन्तन करने को कहा कि सहजमार्ग प्रार्थना में 'इच्छाओं' का सन्दर्भ क्यों दिया गया है ।

८ तारीख की सुबह उन्होंने एक और सत्संग कराया, तत्पश्चात् संक्षिप्त वार्ता दी । उन्होंने वहाँ उपस्थित लोगों से कहा कि नये अभ्यासियों का खुले दिल से स्वागत करना चाहिये और हमें एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिये जो उनके सहजमार्ग के अनुभवों में सहायक हो ।

वे एलूर होते हुए **राजामुन्दरी** आश्रम पहुँचे, जहाँ पर उन्होंने एक बार

फ़िर वृक्षों को सुरक्षित रखने के महत्व और आश्रमों के निकट वृक्षारोपण की आवश्यकता पर बल दिया ।

९ अप्रैल की सायं **काकीनाडा** आश्रम पहुँचने से पहले वे **अमलापुरम** तथा **यानम** केन्द्रों पर गये । सत्संग के बाद अपनी वार्ता में उन्होंने हमारी साधना में निरन्तर और सुसंगत प्रयास की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने कहा, "छोटे छोटे प्रयासों का बड़ा परिणाम निकलता है। प्रारम्भ में छोटा सा प्रयास बहुत महत्वपूर्ण प्रतीत नहीं होता । लेकिन आकाश से गिरती जल की छोटी छोटी बूंदों की तरह हमारे हृदय में उत्पन्न छोटी छोटी अवस्थायें मिल कर बड़ी हो जाती हैं । हर अवस्था के साथ भी ऐसा ही होता है । हमें चाहिये हम उन्हें छोटी बूंदों की तरह समझ कर वाष्पीकृत न होने दें, बल्कि उन अवस्थाओं को हमारे हृदय में एकत्रित होकर एक सागर का रूप लेने दें । और जब मेरा यह सागर गुरुदेव के हृदय में स्थित सागर से एकाकार हो जाता है, तब सुन्दर अति सुन्दर स्थिति बनती है; देखा आपने ।"

कमलेश भाई ने १० तारीख को लगभग १२ बजे प्रस्थान किया और **सम्पथिपुरम** स्थित आश्रम पहुँचे, जो वैजाग से लगभग ४० किलोमीटर की दूरी पर है । सायंकाल वे बाहर अभ्यासियों के साथ बैठे । हैदराबाद परियोजना के विषय में बताते हुए उन्होंने कहा कि यह सहज मार्ग का मक्का बनेगा । इसके बाद विज्ञान और आध्यात्मिकता विषय पर चर्चा होने लगी । रात्रि भोजन के पश्चात् वे काफ़ी देर तक स्थानीय अभ्यासियों के साथ बैठे रहे । उन्होंने भविष्य में मिशन के विकास की सम्भावनाओं पर चर्चा की और आध्यात्मिकता से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दिये । अगले दिन आलस्य पर एक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा, "हमारी अकर्मण्यता के कारण भी संस्कार बनते हैं और कार्यों को करने में हमारी अक्षमता बनती है । जब हम इन पर बार-बार सोचते हैं तो वह भी संस्कारों का निर्माण करता है।"

१२ अप्रैल को प्रात: साढ़े सात बजे के सत्संग के बाद उन्होंने इस यात्रा की समापन वार्ता दी, जिसमें उन्होंने सबको समर्पण भाव के साथ अभ्यास द्वारा अपने में सकारात्मक परिवर्तन लाने तथा इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप नये जिज्ञासुओं को आकर्षित करने के लिये प्रोत्साहित किया । इस के बाद उन्होंने प्रशिक्षकों और अभ्यासियों से अनौपचारिक विचार विमर्श करते हुए कहा कि सभी को मिशन के प्रसार हेतु सक्रिय भागीदारी करनी चाहिये । अपराह्न में उन्होंने स्वयं सेवकों के साथ भोजन ग्रहण किया और उनसे लगभग एक घण्टे तक बातचीत की ।

यात्रा का समापन करते हुवे उन्होंने बताया कि वे अभ्यासियों की सामूहिकता, अनुशासन व आध्यात्मिक सम्मेलनों में एकत्रित होने की उनकी भावना से प्रसन्न व प्रभावित हैं ।

हैदराबाद: १३ अप्रैल

कमलेश भाई प्रात: लगभग १० बजे हैदराबाद पहुँचे और सीधे डोमालगुडा स्थित योगाश्रम गये, जहाँ २००० से अधिक अभ्यासी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । सत्संग के बाद उन्होंने एक लघु वार्ता देते हुए दिनांक ३१ मार्च २०१५ के व्हिस्पर्स संदेश का उद्धरण दिया, जिसमें पूज्य बाबूजी महाराज कहते हैं कि कान्हा शान्तिवनम् परियोजना एक 'आध्यात्मिक अभयारण्य' बनेगी । उन्होंने अभ्यासियों से आग्रह किया कि वे जितना अधिक सम्भव हो इस परियोजना को समय दें और इसे वास्तव में एक वन की तरह विकसित करें, जिसमें पचास हज़ार या उससे भी अधिक वृक्ष हों । उन्होंने यह भी बताया कि इस परियोजना के लिये कम से कम २००० स्वयंसेवकों की आवश्यकता होगी । कान्हा में कुछ घण्टे बिताने के बाद उसी दिन सायंकाल उन्होंने दिल्ली के लिये प्रस्थान किया ।

उत्तर भारत की यात्रा: १४ से २० अप्रैल

१४ अप्रैल को कमलेश भाई ने गुड़गाँव आश्रम में सत्संग कराया और सायंकालीन ध्यान के बाद एक वार्ता दी ।

दिल्ली से उन्होंने १५ तारीख की प्रात: **लखनऊ** के लिये प्रस्थान किया । अमौसी हवाई अड्डे, लखनऊ से वे सीधे आश्रम गये । नाश्ता व थोड़ा विश्राम करने के बाद उन्होंने बाबूजी महाराज के जन्म दिवस समारोह स्थल के नक्शे का अवलोकन किया और सुधार हेतु सुझाव दिये । इसके बाद उन्होंने कार से पूरे स्थल का निरीक्षण किया। तत्पश्चात् उन्होंने ध्यान कक्ष में सत्संग कराया व उसके बाद अभ्यासियों को एक लघु वार्ता दी ।

१६ तारीख को उन्होंने **शाहजहाँपुर** आश्रम के लिये प्रस्थान किया और ९:०० बजे प्रात: वहाँ पहुँच गये । कुछ प्रेमी व उत्साही अभ्यासी उनके स्वागत के लिये हाथों में माला लिये हुए सड़क के किनारे प्रतीक्षा कर रहे थे । आश्रम पहुँच कर वे बाबूजी महाराज के महासमाधि मण्डप गए और वहाँ अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये । इस स्थान पर लगभग पाँच मिनट के संक्षिप्त ध्यान के पश्चात् वे ध्यान कक्ष में पहुँचे और वहाँ सत्संग कराया ।

इसके बाद गुरुदेव ने आश्रम के चारों ओर चक्कर लगाया तथा रसोईघर एवम् भोजन प्रभाग का विशेष रूप से जायज़ा लिया । उन्होंने भविष्य में होने वाले पुनरुद्धार तथा नव निर्माण में सुधार के लिये कई सुझाव भी दिये । तत्पश्चात् उन्होंने अपनी ई-मेल देखी और

प्रशासनिक विषयों पर चर्चा की । गुरुदेव ने शाम का सत्संग कराया तथा शाहजहाँपुर में एक स्नेही और समर्पित अभ्यासी के घर भी गये।

अपनी एक वार्ता के दौरान उन्होंने कहा, "लालाजी महाराज कहा करते थे कि हमारी साधना ऐसी होनी चाहिये कि हमारी प्रगति हमारे व्यवहार में परिलक्षित हो । दूसरे लोग यह कह सकें कि 'हाँ यह सहज मार्ग का अभ्यासी है ।' हमें अपना जीवन ऐसे जीना चाहिये कि हम उनकी याद में डूबे रहें और शाम की सफ़ाई की आवश्यकता ही न पड़े । यही सर्वोच्च उपलब्धि है ।"

शाहजहाँपुर में रह कर कमलेश भाई, ग्रामीणों के बड़े समूह को दूर से प्रारम्भिक सिटिंग देते हुए तटीय आन्ध्रा में भी कार्य कर रहे थे ।

१७ तारीख को उन्होंने ध्यान कक्ष में सत्संग कराया । नाश्ते के बाद वे बाबूजी महाराज के घर गये और उसी कमरे में सत्संग कराया, जहाँ बाबूजी रहा करते थे और काम करते थे ।

प्रात: ९:३० बजे उन्होंने शाहजहाँपुर से **फ़तेहगढ़** के लिये प्रस्थान किया । आश्रम पहुँच कर उन्होंने सत्संग कराया और फ़िर आश्रम भवन के विकास के लिये कुछ प्रस्ताव दिये । अपनी वार्ता में उन्होंने कहा, "उनके संदेश का लोगों में प्रसार ही हमारी उनको गुरु दक्षिणा है । नये लोग साधना जारी रखते हैं या नहीं, यह उनकी इच्छा है । परन्तु उनको सहज मार्ग की साधना के बारे में ज्ञान होना चाहिये। हमें उनको आश्वस्त करना है कि जब भी उनकी इच्छा हो, हमारे दरवाजे उनके लिये खुले हुए हैं । उनकी आलोचना न करें । सहज मार्ग प्रेम का रास्ता है ।"

सभी अभ्यासी प्रिय गुरुदेव को रात्रि का भोजन बाँटते देख कर प्रेम एवम् कृतज्ञता से अभिभूत हो गये । उन्होंने रात्रि में आश्रम में ही ठहरने का निश्चय किया तथा १८ अप्रैल की शाम ६ बजे फ़तेहगढ़ से प्रस्थान किया ।

लखनऊ जाते हुए यात्रा में, उनकी थोड़ी देर के लिये हरदोई में सार्वजनिक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवन में रुकने की योजना थी । वे स्थानीय अभ्यासियों से मिले तथा लखनऊ आश्रम के लिये प्रस्थान से पूर्व सत्संग कराया ।

कमलेश भाई १९ तारीख को सुबह जल्दी उठ गये । उन्होंने अपनी ई-मेल देखी और फिर ध्यान कक्ष में प्रात:कालीन सत्संग कराया । सत्संग के पश्चात् उन्होंने एक वार्ता दी, जिसमें उन्होंने सतर्कता के साथ अभ्यास के महत्व पर बल दिया । उन्होंने अनुशासन की आवश्यकता बतायी तथा इस बात पर जोर दिया कि यह अभ्यासियों के अपने लाभ के लिये है ।

उन्होंने सभी स्वयंसेवकों के साथ कॉटेज में दोपहर का भोजन लिया तथा शाम को ध्यान कक्ष में सत्संग कराने आये । अपनी छोटी सी वार्ता में उन्होने कहा, "चीज़ों की इच्छा मत करो, वो जैसी हैं उनको वैसा ही स्वीकारना प्रारम्भ करो और ऐसा आनन्द पूर्वक करो । हमें कष्टों से शिक्षा ग्रहण करने योग्य बनने के लिये उनको खुशी खुशी स्वीकारना है । एक कटु, क्रोधित एवम् भावशून्य हृदय हमेशा गुरुदेव की कृपा को प्रतिकर्षित करता है, जबकि वो जो सभी परिस्थितियों में सदैव प्रसन्न एवम् कृतज्ञ रहता है वो गुरुदेव की कृपा को अपने आप पाता रहता है और ऐसे व्यक्ति की तरक्की तेजी से होती है ।" गुरुदेव ने भोजन कक्ष में सभी स्वयंसेवकों के साथ रात्रि का भोजन लिया, जो उन सब के लिये अत्यधिक प्रसन्नता का अवसर था ।

२० अप्रैल को गुरुदेव नई दिल्ली जाने के लिये आश्रम से सुबह ९:०० बजे अमौसी हवाई अड्डे के लिये निकले और फ़िर दिल्ली से वे अहमदाबाद को प्रस्थान कर गये ।

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

मणपाक्कम से समाचार

लैटिन अमेरिका और आईबेरियन पेनिनसुला के अभ्यासियों के लिये सेमिनार: ९–१४ फरवरी

ब्राजील, चिली, कोलम्बिया, इक्वैडोर, फ्रान्स, हैटी, मार्टिनीक, मैक्सिको, मोरक्को,पुर्तगाल, स्पेन, यू०एस०ए० और वेनेजुएला के अभ्यासियों ने इस सेमिनार में भाग लिया ।

प्रति दिन तीन सत्संग और दो कार्यक्रम थे । सेमिनार के दौरान अनेक सत्रों में आत्म–निरीक्षण को सम्मिलित किया गया था, जिसके बाद छोटे समूहों में चर्चा की गई और फ़िर व्यक्तिगत विचार तथा भावनाओं के आदान प्रदान के साथ प्रतिभागियों की व्यक्तिगत टिप्पणी शामिल की गयी । प्रस्तुतियों की एक शृंखला "गुरुदेव को आत्मसात करें तथा उनकी शिक्षाओं को मूर्त रूप में प्रकट करें" विषयवस्तु पर केन्द्रित थी । लालाजी महाराज द्वारा दिये गये "वार्तालाप के सिद्धांत" पर आधारित सत्र ने प्रतिभागियों को इस बात पर आत्मचिंतन करने और अपने आप से ये कुछ प्रश्नोत्तर करने पर विवश किया कि वे स्वयं दूसरों के साथ कैसे बातचीत करते हैं, दूसरों के प्रति वे कैसा भाव रखते हैं और वे अपने वार्तालाप के तरीके में स्वयं क्या परिवर्तन लायेंगे । कार्यक्रम के अंतिम दिनों में, बहुत से अभ्यासियों ने इन प्रश्नों के प्रति अपने स्वयं के उत्तर, अपने निजी जीवन में घटित अनुभवों के उदाहरण देकर, सबके साथ साझा किये ।

शुक्रवार, १३ फरवरी को कमलेश भाई ने सेमिनार के प्रतिभागियों को एक वार्ता दी । उस वार्ता के कुछ अंश नीचे दिये गये हैं:

* हमारे ज्ञान के पीछे हमारा अनुभव होना चाहिये । हमारे विचारों में बहुत शक्ति है, लेकिन उनके पीछे भी हृदयानुभूत अन्तरज्ञान जैसा अनुभव होना चाहिये और फिर यह वास्तविक सत्य बन जाता है ।

* बहुत ज्यादा नहीं बोलें । हमारा बाहरी व्यवहार हमारी आंतरिक सुन्दरता का प्रकटन है । शुद्धता तब विकसित होती है जब प्रत्येक कार्य उचित प्रकार से किया जाता है ।

* हमारी सफाई की प्रक्रिया बहुत प्रभावी है । हम मौलिक सफाई के अभ्यास में तीन परिवर्तन कर सकते हैं:

१) कोई निर्णय लेने से पहले संक्षिप्त सफाई, जिससे नकारात्मक परिणाम से बचा जा सके ।

२) किसी व्यक्ति से मिलने से पहले संक्षिप्त सफाई, ताकि उस व्यक्ति के साथ सम्भावित विरोध से बचा जा सके ।

३) कोई भी नकारात्मक घटना होने के तुरन्त बाद संक्षिप्त सफाई ।

प्रशिक्षक प्रत्याशी कार्यक्रम

६ – १५ मार्च

४३ भाइयों एवं बहिनों ने इस सेमिनार में भाग लिया । इसमें प्रशिक्षक के कार्यों में हाल ही में किये गये परिवर्तनों के ऊपर जानकारी दी गयी । सहज मार्ग का दर्शन, हालत को पढ़ना एवं दस नियम सहित अन्य विषयों पर सत्र संचालित किये गये ।

कमलेश भाई ने प्रत्याशियों को तीन अवसरों पर सम्बोधित कर अपना समय देने में बहुत उदारता दिखाई । उन्होंने प्रशिक्षकों के विनम्र होने व अपने काम में गुमनाम रहने की आवश्यकता पर तथा अपनी साधना को जोश के साथ करने के महत्व पर बल दिया । प्रत्याशी तब बहुत हर्षित हुवे जब प्रेक्षागृह की छत पर गुरुदेव ने उनके साथ रात्रि का भोजन किया ।

जब कि नये प्रशिक्षक अपने 'पवित्र व नेक' कार्य को प्रारम्भ करने की तैयारी कर रहे थे, ऐसे समय में सेमिनार ने भाईचारे की तथा संकल्प की भावना उत्पन्न करने का कार्य किया ।

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

'अपनी नियति की रूपरेखा तैयार करना': अखिल भारत युवा संगोष्ठी – मार्च

ई–मेल के माध्यम से प्रेषित निर्देशों के अनुसार दो माह से भी अधिक अवधि तक साप्ताहिक गतिविधियों द्वारा तैयारी कर रहे, समस्त भारत से आये १८ से २५ आयु वर्ग के लगभग ४५० प्रतिभागियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। पूरी संगोष्ठी के दौरान 'सूचना' के स्थान पर 'अनुभव' को अधिक महत्व देने पर जोर दिया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ चारीजी की वार्ता "स्वप्नदर्शी बनना" से हुआ। बहिन एलिजाबेथ डेनली ने समझाया कि कैसे सहज मार्ग की सुनियोजित साधना के द्वारा एक अभिलाषी दूसरों के साथ 'संवाद' के स्थान पर 'आन्तरिक जुड़ाव' की ओर बढ़ सकता है। अन्य गतिविधियों में सहज मार्ग साधना पर आधारित प्रेरक सत्र शामिल थे। अपनी यात्रा से लौटने के बाद कमलेश भाई ने तीसरे दिन और उसके बाद प्रतिदिन प्रात:कालीन सत्संग कराया। सत्संग के पश्चात् उनके द्वारा दी गयी वार्ताओं में निम्न लिखित बहुमूल्य सुझाव दिये गये:

- प्रार्थना करने की स्थिति से आगे बढ़कर हमेशा प्रार्थनापूर्ण स्थिति में बने रहिए। ध्यान करने से आगे बढ़कर हमेशा ध्यान की स्थिति में बने रहिए।
- जब हम भंडारे में होते हैं, तब हम कुँए में लटकाई हुई बाल्टी की तरह होते हैं। जब यह बाल्टी डूबी हुई होती है, पूरी भरी हुई दिखाई देती है; लेकिन जैसे ही इसे बाहर निकाला जाता है, इस में से कुछ पानी बाहर छलक जाता है। और यदि बाल्टी में कुछ छेद हैं तो जब तक बाल्टी बाहर आती है, सब कुछ बाहर गिर जाता है। ये छेद कुछ भी नहीं, बल्कि हमारे हृदय में उपस्थित इच्छायें हैं।
- यदि निर्वात में दो गोलार्ध कसकर जुड़े हैं तो उन्हें अलग कर पाना बहुत मुश्किल होता है। जैसे ही तुम थोड़ी सी वायु प्रवेश कराते हो, वे आसानी से अलग हो जाते हैं। ऐसी है निर्वात की शक्ति। अपने हृदय में ऐसा खालीपन (निर्वात) उत्पन्न करो कि स्रोत के साथ एक शक्तिशाली अटूट बन्धन निर्मित हो जाये। एक छोटी सी भी इच्छा हृदय के खालीपन को नष्ट कर देती है।
- हमेशा अपने माता–पिता को प्यार और सम्मान दो। उनको दु:ख पहुँचाने के लिये कोई भी उचित कारण नहीं हो सकता है।
- सुविचारित इच्छायें हमारी नियति में हस्तक्षेप करती हैं। नियति तब प्रकट होती है जब हम उसमें हस्तक्षेप न करना सीख लेते हैं।
- साधना के दो तत्व होते हैं। हमारे दृष्टिकोण को निर्धारित करने में अभ्यास का योगदान केवल ५% है, शेष ९५% भाग हमारी प्रवृत्ति द्वारा निर्धारित होता है। अभ्यास सिखाया जा सकता है, लेकिन प्रवृत्ति सिखाई नहीं जा सकती; हमें उसे विकसित करना होता है।

कमलेश भाई ने प्रसन्नचित्त ढंग से दो प्रश्नोत्तर सत्र भी किये, जिसमें उन्होंने अन्तर्मन से मार्गदर्शन प्राप्त करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। वे समूह से मिलकर बहुत प्रसन्न थे और विश्वास

व्यक्त किया कि सभी लोग अपने आप को भविष्य में उच्चतर कार्य करने के लिये तैयार करेंगे । उन्होंने निम्नलिखित मूलभूत पुस्तकों के संपूर्ण अध्ययन की संस्तुति की: मेरे गुरुदेव, मानव विकास में सद्गुरु की भूमिका, व्यक्तित्व का प्रकटन, प्रेम एवं मृत्यु तथा राम चन्द्र की सम्पूर्ण कृतियाँ ।

जैसे जैसे गोष्ठी के समापन का समय निकट आता गया, ऐसे अवसरों पर होने वाले दुःख का स्थान अभिभूत कर देने वाले हर्ष एवं एक नई शुरुआत की अनुभूति ने ले लिया ।

पूर्वी राज्यों के प्रशिक्षकों की गोष्ठी

२४ से २८ मार्च, २०१५

इस गोष्ठी जिसका विषय था 'गुरुदेव को आत्मसात करें तथा उनकी शिक्षाओं को मूर्त रूप में प्रकट करें' में पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, झारखंड और सिक्किम से आये लगभग ८२ प्रशिक्षकों के साथ महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और तमिलनाडु से आमन्त्रित लोग उपस्थित थे ।

इस कार्यक्रम का समन्वयन आठ फ़ेसिलिटेटर्स के एक दल द्वारा किया गया और इसमें चारीजी महाराज द्वारा ऐसी गोष्ठियों के लिये निर्धारित अग्रलिखित मुख्य उद्देश्यों को अपनाया गया था: प्रशिक्षकों के बीच सच्चे भाईचारे को बढ़ाना और आपसी सहयोग तथा विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करना ।

विभिन्न वार्ताओं एवं परिचर्चाओं में सम्मिलित किये गये विषय थे – 'एक जागरूक जीवन शैली', 'परिष्करण एवं नियति' तथा 'करना, न करना' । प्रत्येक सत्र का प्रारम्भ कमलेश भाई द्वारा इस वर्ष के आरम्भ में घोषित नयी तकनीकों में से एक के व्यावहारिक प्रयोग के साथ किया गया । हर प्रतिभागी को 'हार्टफ़ुलनैस' तनाव मुक्ति पद्धति को सीखने का अवसर भी मिला ।

अन्तिम सन्ध्या को कमलेश भाई ने प्रेक्षागृह की छत पर रात्रिभोज का आयोजन किया । उन्होंने सभी प्रतिभागियों के साथ बड़े सौहार्दपूर्ण ढ़ंग से बातचीत की और हर एक के दिल को छू लिया । प्रतिभागियों ने ऐसे और कार्यक्रमों में भाग लेने की उत्कण्ठा व्यक्त की ।

सन्देश का प्रसार

प्रकासम ज़िले के यद्दनपुडी मंडल का यानमंडला एक छोटा सा ग्राम है । आदरणीय कमलेश भाई ने इस ग्राम का भ्रमण किया और अपनी तटवर्ती आन्ध्र यात्रा के दौरान ६ अप्रैल को एक खुले सत्र का संचालन किया । लगभग २५० ग्रामवासी सहज मार्ग की ध्यान पद्धति के बारे में अधिक जानने के लिये एकत्रित हुएथे । उन्होंने 'जीवन का उद्देश्य एवं ध्यान की आवश्यकता' विषय पर सन्देश दिया । बहन उमा गंगाधर (केन्द्र प्रभारी, नेल्लोर) ने सन्देश का तेलुगु में अनुवाद किया । इस सभा में स्थानीय विधायक ने भी भाग लिया । उन्होंने कमलेश भाई से मर्टुर में होने जा रही निर्वाचन क्षेत्र स्तरीय बैठक के दौरान एक और खुले सत्र का संचालन करने की प्रार्थना की । इस सत्र के दौरान कमलेश भाई ने कई प्रश्नों के उत्तर दिये, जिनमें उन्होंने ध्यान की आवश्यकता को रेखांकित किया ।

विधायक की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए प्रकासम ज़िले के मर्टुर ग्राम में १६ अप्रैल को एक और खुले सत्र का आयोजन किया गया । इस सत्र में ८०० कर्मचारी और गैर-कर्मचारी उपस्थित थे । बहन उमा गंगाधर ने सहज मार्ग की ध्यान पद्धति और मानव जीवन के उद्देश्य को संक्षेप में समझाया । बाद में डॉ० वेंकट आर० एडरा ने ध्यान के लाभों के बारे में संक्षेप में बताया । उन्होंने सभी से दस मिनट के लिये ध्यान में बैठने को कहा । ध्यान के बाद सबने विश्रान्ति का अनुभव किया । कुछ लोगों ने बताया कि उन्हें असाधारण शान्ति का अनुभव हुआ । इस समय कमलेश भाई शाहजहाँपुर में थे । उन्होंने इन ८०० उपस्थित व्यक्तियों को दूरवर्ती सिटिंग दी। सिटिंग के पश्चात् कमलेश भाई ने समूह को सम्बोधित किया और बताया कि परिचयात्मक सिटिंग्स को पूरा करने हेतु वे दूसरी और तीसरी सिटिंग के लिये १७ और १८ अप्रैल के दिन रात्रि के ९ बजे बैठ सकते हैं । इस कार्यक्रम के आयोजन में कई स्वयंसेवक सक्रिय रूप से कार्यरत थे ।

श्री राम चंद्र मिशन

एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

यू कनेक्ट कार्यकलाप

गाजियाबाद

२९ मार्च को गाज़ियाबाद के शांतिकुंज आश्रम में एक दिवसीय यू–कनेक्ट सेमिनार आयोजित किया गया । इसमें आगरा, मेरठ, हापुड़, ग्वालियर, मुज़फ़्फ़रनगर, मुरादाबाद, नोयडा, वैशाली, दिल्ली और गुड़गाँव सहित अनेक केन्द्रों के ८० से अधिक प्रतिभागी उपस्थित थे।

भाई सुमित अरोरा (केन्द्र प्रभारी, गाज़ियाबाद) और भाई हरप्रीत भान (नोयडा) ने सत्र को संचालित किया और मूल विषय, यू–कनेक्ट कार्यक्रम के उद्देश्य और प्रक्रिया से परिचित करवाया । उन्होंने सम्मिलित रूप से सहभागियों के प्रश्नों के उत्तर दिये ।

स्वयं–सेवकों ने "उन्मुखीकरण"और "योग" पर कृत्रिम सत्र का प्रदर्शन किया । सेमिनार के अंत में प्रतिभागियों से अनुरोध किया गया कि वे अपने क्षेत्र में ऐसे शिक्षा संस्थाओं का चयन करें, जहाँ उनके पाठ्यक्रम में आत्म विकास कार्यक्रम (एस०डी०पी०) को सम्मिलित किया जा सके ।

कोल्हापुर

भीमा इन्स्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेण्ट एण्ड टेक्नोलौजी, कोल्हापुर के एम०बी०ए० छात्रों के लिये चलाया गया एस०डी०पी० कार्यक्रम सफ़लतापूर्वक सम्पन्न हुआ । संस्था के अधिष्ठाता से इस कार्यक्रम के लिए उत्तम समर्थन प्राप्त हुआ ।

अगस्त २०१४ से फ़रवरी २०१५ तक कुल मिलाकर १२ सत्रों का आयोजन किया गया । इन संवादात्मक सत्रों में ३१ विद्यार्थियों ने भाग लिया और कार्यक्रम में इन प्रतिभागियों की सहभागिता उत्साहवर्धक रही । कुछ सत्रों में भीमा शिक्षा समिति के संकाय सदस्यों ने भी भाग लिया और उन्होंने कार्यक्रम के माध्यम से दी गयी जानकारी एवं मूल्यों की सराहना की ।

लगभग २७ छात्रों को ध्यान के सुनियोजित अभ्यास से परिचित कराया गया और उन्होंने प्रारम्भिक सिटिंग भी लीं । सामूहिक ध्यान की व्यवस्था महाविद्यालय के परिसर में की गयी थी । एक भव्य समारोह में, श्री ए० के० गुराव द्वारा सहभागिता प्रमाण–पत्र वितरित किये गये । छात्रों ने अपने अनुभवों को साझा किया और बताया कि ध्यान से उनको क्या लाभ हुआ ।

यह घोषणा की गयी कि जुलाई २०१५ से महाविद्यालय की समय सारणी में यू–कनेक्ट कार्यक्रम के लिये एक विशेष समयावधि निश्चित की जायेगी, ताकि अधिकतम विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके ।

कोलकाता

दिनांक १४ और १५ मार्च २०१५ को बी०एम०ए० कोलकाता में एक द्वि–दिवसीय यू–कनेक्ट संकाय विकास/उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में बिहार, झारखण्ड, आसाम तथा पश्चिम बंगाल के लगभग ७५ अभ्यासियों ने भाग लिया । सहभागियों को यू–कनेक्ट पहल का संक्षिप्त विवरण दिया गया और इसके बाद समन्वयक, फ़ेसिलिटेटर तथा संकाय की भूमिका एवं उत्तरदायित्व के बारे में चर्चा हुई । साथ ही शिक्षण संस्थाओं से कैसे सम्पर्क किया जाये एवं यू–कनेक्ट टीम द्वारा तैयार की गयी सामग्री, के विषय में भी बताया गया । सहभागियों को पाँच समूहों में विभाजित कर प्रत्येक समूह को यू–कनेक्ट पाठ्यक्रम का एक अध्याय दिया गया और उन्हें इस पर एक प्रदर्शन सत्र तैयार करने के लिये कहा गया । कार्यक्रम का समापन एक फ़ीड बैक सत्र एवं कार्य योजना परिभाषित करने के साथ हुआ।

उत्तरी आन्ध्र प्रदेश

यू–कनेक्ट समाचार का शेष...

मार्च १४ और १५ को, अंचल १ए के वारंगल आश्रम और अश्वपुरम् तथा सथुपल्लि केंद्रों में कृत्रिम प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। ध्यान, मूल्य, योग और धर्म पर तथा "आन्तरिक विकास, बाह्य विकास का पथ प्रदर्शक है" विषय वस्तु पर प्रस्तुतिकरण दिये गये, जिसके पश्चात् गुरुदेव का एक वीडियो दिखाया गया। युवाओं के साथ साथ स्थानीय अभ्यासी और प्रशिक्षकों ने भी सहभागिता की। इस कार्यक्रम ने सभी युवाओं को एक दूसरे को समझने और सहज मार्ग से जुड़ने का अवसर प्रदान किया। छात्रों ने उत्सुकता और ग्रहणशीलता से इस कार्यक्रम में भाग लिया

यू–कनेक्ट कार्यक्रम में सहभागिता के लिये कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें:

http://www.sahajmarg.org/resources/programs/uconnect

मूल्य शिक्षा

एस०एच०पी०टी० द्वारा प्रारम्भ किया गया मूल्य शिक्षा (वी०ई०) कार्यक्रम देश के विभिन्न भागों में जोर–शोर से चल रहा है। कई विद्यालयों ने वी०ई० पाठ्यक्रम को अपने शिक्षण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में अप्रैल से प्रारम्भ हो गये शिक्षा सत्र में सम्मिलित करने का निर्णय लिया है। इस सम्बन्ध में हमें जो विवरण प्राप्त हुए हैं, उनमें से कुछ निम्न हैं।

माह अप्रैल में **राबड़ियावास** (राजस्थान) के अम्बुजा पब्लिक स्कूल में कक्षा ८ और ९ के लिये वी०ई० पाठ्यक्रम लागू किया गया। प्रारम्भिक सत्रों के बाद विद्यार्थी कक्षा में सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित कर रहे हैं और उत्साहित होकर उत्तर दे रहे हैं।

शिक्षा सत्र २०१५–२०१६ के लिये सेंट माइकल्स स्कूल **सिलिगुड़ी** में वी०ई० पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। कक्षा ९ और ८ के लिये क्रमश: ७ और ११ अप्रैल को प्रस्तुतिकरण दिये गये। सक्रिय अध्ययन के माध्यम से छ: 'सार मूल्यों' को कैसे प्रदान किया जाये, इसके बारे में भी एक विचार दिया गया। कुल मिलाकर ये बहुत ही रुचिकर सत्र थे, जिनमें विद्यार्थियों ने सक्रियता से सहभागिता की।

७ अप्रैल को केन्द्रीय विद्यालय नं० २, रेलवे कालोनी, **झपटपुर** में शिक्षकों के लिये मूल्य शिक्षा कार्यक्रम पर एक उन्मुखीकरण सत्र आयोजित किया गया। प्रतिभागियों को मूल्यों को विकसित करने के महत्व पर जोर देते हुए, कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण दिया गया। सत्र के अन्त में शिक्षकों ने कक्षा के संचालन में स्वयं–सेवकों को सहायता प्रदान करने का वचन दिया।

अपने इलाके में मूल्य शिक्षा में स्वयं सेवक के रूप में सहभागिता करने के लिये निम्न पते पर सम्पर्क करें।

http://www.sahajmarg.org/resources/programs/values-education

श्री राम चंद्र मिशन

एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

युवा गतिविधियाँ

शोलावन्धन, तमिलनाडु

१४ अप्रैल को शोलावन्धन, शिवगंगई, चिन्नालपट्टी और मदुरै केन्द्रों के ३० अभ्यासियों के लिये एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने अपने-अपने केन्द्रों में आयोजित गुरुदेव, पद्धति तथा मिशन के प्रति झुकाव बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियों से सम्बन्धित अपने अनुभव बाँटे। स्वयं में किस प्रकार आवश्यक परिवर्तन लाया जाये, इस विषय में गुरुदेव के उद्धरणों तथा 'सत्य का उदय' पुस्तक के उद्धरणों पर आधारित एक जीवन्त प्रस्तुतिकरण दिया गया। अन्त में युवाओं द्वारा भविष्य में मिशन के विकास को प्रोत्साहित करने के लिये की जाने वाली गतिविधियों के विषय में चर्चा की गयी। सभी प्रतिभागियों के लिये दिनभर का यह कार्यक्रम एक आध्यात्मिक आश्रय स्थल के अनुभव जैसा था।

हुबली, कर्नाटक

१३ और १४ मार्च को उत्तरी कर्नाटक के विभिन्न केन्द्रों से आये ४२ युवा अभ्यासियों के लिये हुबली केन्द्र में एक दो दिवसीय युवा-गोष्ठी आयोजित की गयी। हुबली केन्द्र के युवा अभ्यासियों के दल ने एक माह से अधिक समय तक इस गोष्ठी की तैयारी करने में गहनता से कार्य किया। वे स्वयं विभिन्न केन्द्रों पर गये तथा उन्होंने युवाओं को इस गोष्ठी में भाग लेने के लिये प्रेरित किया। प्रतिभागियों ने लक्ष्य, आध्यात्मिक यात्रा, साधना, तथा रूपान्तरण विषयों पर संवादात्मक सत्रों में भाग लिया, जिसने अन्तरावलोकन और आत्माभिव्यक्ति को पर्याप्त महत्व प्रदान किया। सुबह का शारीरिक व्यायाम, सत्संग, स्वर्णिम मौन, खेल, पिकनिक तथा शाम की सफ़ाई भी दिनचर्या में सम्मिलित की गयी।

ग्रीष्मकालीन शिविर, गाज़ियाबाद

११ तथा १२ अप्रैल को शान्तिकुंज आश्रम में बच्चों के लिये एक ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किया गया। गाज़ियाबाद, नौयडा तथा वैशाली आश्रमों के बच्चों ने इस शिविर में भाग लिया। सभी बच्चों को एक स्वागत-किट प्रदान किया गया।

शिविर की विषयवस्तु थी – 'इन्द्रधनुष'। आश्रम परिसर को विभिन्न शिल्पकलाओं द्वारा कलात्मक ढ़ंग से सजाया गया था, जिससे चारों ओर रंग बिखर रहे थे। एरोबिक्स (व्यायाम) सत्र के साथ शिविर का शुभारम्भहुआ। नाश्ते का समय एक दूसरे के साथ साझा करने तथा एक दूसरे की देखभाल करने जैसे मूल्यों के अभ्यास का समय था। कहानी सुनाने का एक सत्र भी इसके साथ सम्मिलित था। इसके बाद एक 'कला तथा शिल्प' सत्र आयोजित किया गया, जिसमें 'पुनर्प्रयोगी सामग्री' का उपयोग किया गया। दोपहर के भोजन के उपरान्त बच्चों को कठपुतली का खेल तथा चलचित्र दिखाया गया। शाम का समय स्वयंसेवी कार्यों में व्यतीत किया गया, जैसे – आश्रम परिसर की सफ़ाई, ध्यान-कक्ष की कुर्सियों की धुलाई तथा पौधों की सिंचाई। बच्चों ने एक अद्भुत निष्कपटता के भाव का प्रदर्शन किया तथा यह सब कार्य करने में भरपूर आनन्द उठाया।

स्वयंसेवकों ने बच्चों के लिये खुली हवा में खेले जाने वाले खेलों का भी आयोजन किया, जैसे फ़ुटबॉल, क्रिकेट तथा रस्साकस्सी। बच्चों ने शाम को मौन शब्द-पहेली तथा एरोबिक्स सत्र का आनन्द उठाया। डायरी-लेखन तथा रात्रिकालीन प्रार्थना के साथ दिन का समापन हुआ।

अगली सुबह नाश्ते के बाद एक एरोबिक्स सत्र रखा गया। जबकि सभी अभ्यासी रविवारीय सत्संग के लिये ध्यान-कक्ष में चले गये, बच्चों ने बाल-केन्द्र को सजाया और विभिन्न खेल खेले। बच्चों ने परस्पर साझा करने व देख रेख करने, सामूहिक भावना, एकता, कठोर परिश्रम, प्रकृति का सम्मान, सह-अस्तित्व तथा सहयोग जैसे मूल्यों का महत्व समझा तथा उन पर चर्चा की। इसके बाद वे अगले ग्रीष्मकालीन शिविर की उत्सुकता से प्रतीक्षा के साथ अपने अपने घरों को लौट गये।

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

झलकियाँ

कोयम्बटूर, तमिलनाडु

५ अप्रैल को कोयम्बटूर हवाई अड्डे के पास, निकट में रह रहे लगभग ४० अभ्यासियों को सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से, एक नये उप–केन्द्र का उद्घाटन किया गया । प्रातः ७:३० बजे का सत्संग अंचल प्रभारी भाई टी०वी०वी० राव ने संचालित किया । लगभग ८० वर्तमान अभ्यासियों के साथ–साथ १० नये अभ्यासियों ने सत्संग में भाग लिया । तदोपरांत एक प्रश्नोत्तरी सत्र हुआ जिसमें कोयम्बटूर के केंद्र प्रभारी भाई टी०एस०मनियम तथा अंचल प्रभारी द्वारा श्रोताओं के द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दिये गये । अनुभवों का आदान–प्रदान सत्र के पश्चात् द्वितीय सत्संग और दोपहर के भोजन के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई ।

भीलवाड़ा, राजस्थान

८ मार्च को भीलवाड़ा में सत्संग के पश्चात्, 'रेस विद लाईफ़' (जीवन के साथ दौड़) विषय पर एक प्रस्तुति दी गयी, जिसमें अभ्यासियों के मित्रों और परिजनों को भी आमंत्रित किया गया था । प्रतिभागियों को जीवन से सम्बन्धित १० प्रश्नों के एक समूह पर मनन करने के लिये कहा गया: क्या यह यात्रा है या दौड़? यदि जीवन एक दौड़ है, तो हम किसके लिये दौड़ रहे हैं? क्या हम सभी एक ही दिशा में दौड़ रहे हैं?हम अपनी दिशा ढूँढने के लिये कुछ देर रुकते क्यों नहीं हैं? एक संवादात्मक सत्र में प्रतिभागियों से पूछा गया कि उन्हें किस प्रश्न ने सबसे अधिक झकझोरा ? समापन सत्र में उन्हें फ़ीडबैक प्रपत्र भरने के लिये कहा गया । सभी ने कहा कि उन्हें कार्यक्रम बहुत पसन्द आया और वे चाहेंगे कि आगे भी ऐसे सत्र नियमित रूप से आयोजित होते रहें । यह आशा की जाती है कि यह कार्यक्रम उस चिंतन की प्रक्रिया को प्रारंभ करने में सफ़ल रहा है जो उनके जीवन प्रवाह को बदल सकती है ।

मंगलौर, कर्नाटक

२२ फरवरी को क्रेस्ट के निदेशक भाई मोहनदास द्वारा 'भक्ति कैसे विकसित करें' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी । इस कर्यशाला में मंगलौर और निकट के केंद्रों से ६९ अभ्यासी उपस्थित हुवे । उन्होंने गुरुदेव के प्रति भक्ति के महत्त्व और तीव्र आध्यात्मिक प्रगति के लिये इसकी आवश्यकता को विस्तार से समझाया । अभ्यासियों से कहा गया कि इस तरह की भक्ति कैसे विकसित की जा सकती है, इस पर वे अपने विचार व्यक्त करें तथा भक्ति विकसित करने में आने वाली बाधाओं की सूची तैयार करें ।

दोपहर के भोजन के पश्चात् इस विषय पर एक सामूहिक परिचर्चा आयोजित की गयी । भाई मोहनदास ने सभी प्रस्तुत विचारों के सारांश स्वरूप बताया कि यदि प्रत्येक अभ्यासी पूर्व वर्णित तीन या चार सुझावों को गंभीरता से अपनाये तो वह अवश्य ही भक्ति विकसित कर लेगा तथा शीघ्रता से उन्नति करेगा । एक प्रश्नोत्तरी सत्र में कुछ सन्देहों का स्पष्टीकरण प्राप्त हुआ । अभ्यासियों को दस मिनट आत्मनिरीक्षण करने के लिये आमंत्रित किया गया कि, उन्होंने क्या महसूस किया है जो कि उन्हें भक्ति को बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत तौर पर करना चाहिये । इसके बाद प्रत्येक व्यक्ति ने एक–एक बिन्दु दूसरों के साथ साझा किया । सायं ४:०० बजे के सत्संग के साथ कार्यशाला का समापन हुआ ।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2015 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.